1857 और अवन्ती बाई लोधी

डा0 नीता,

एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग, नारी शिक्षा निकेतन, स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लखनऊ।

इतिहास की महानता को नकारा नहीं जा सकता। 1857 का इतिहास भारतवर्ष के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। 1857 का विद्रोह इसलिये सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि उस विद्रोह ने ही वर्तमान भारत की नींव रखी, जो अपने अस्तित्व में 1947 में आया। यह एक ज्वालामुखी के रूप में फूटा और उसकी लपटों ने पूरे देश को स्वदेश–प्रेम की भावना से जाग्रत कर दिया।

1857 का तथाकथित विद्रोह अकस्मात् घटना नहीं थी। इसकी पृष्ठभूमि में वह असंतोष निहित था जो 19 वी शताब्दी के प्रांरभ से ही भारतवासियों में फैला हुआ था। यह राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजों के विरूद्ध हुआ प्रथम विद्रोह था जिसने ब्रिटिश साम्राज्य को हिला कर रख दिया था। अंग्रेजों ने भारत में छल एवं कपट द्वारा ब्रिटिश शासन की स्थापना की थी। 1857 ई0 तक सम्पूर्ण भारत अंग्रेजों के आधिपत्य में आ चुका था। यद्यपि ऊपर से लगता था कि भारतीय अंग्रेजों के प्रशासन को चुपचाप स्वीकार कर चुके हैं किन्तु उनके दिलों में असंतोष की जो चिंगारी सुलग रही थी, वही 1857 में विद्रोह के रूप में बदल गई।

1857 भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 'गदर' नहीं, विद्रोह था–अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ। 1857 जैसी घटनाएं इतिहास में कभी–कभी होती है। इतिहास साक्षी है प्रत्येक युग में ऐसी अनेक नारियां अवतरित हुई हैं जिन्होनें अपनी मेधा एवं शौर्य का परिचय दिया है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और बेगम हजरत महल ये दोनों महिलाएं ही 1857 की लड़ाई की सर्वमान्य नेता और नायक हैं, इन्होनें ब्रिटिश सरकार के निरंकुश शासन के विरोध में क्रांति का बिगुल बजा दिया था। उनके नाम तो स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है, लेकिन जिन्होनें अपना प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष योगदान दिया और जिनके नाम किसी कारणवश उजागर नहीं हो पाये, विशेषकर दलित महिलाएं। 1857 की दास्तान उन दलित वीरांगनाओं के बिना अधूरी हैं, जिन्होनें अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिये। डी0जी0 डीन्कर का मानना है कि ''दलित महिलाएँ भी किसी तरह का बलिदान देने में पीछे नहीं रही बल्कि औरों से अधिक उत्सर्ग की भावना से आगे बढ़कर मातृभूमि के लिये फाँसी के फंदे को गले में डालकर और सीने में गोली खाकर शहीद हो गयी।''

1857 के स्वतंत्रता संग्राम का श्रेय भले ही मंगल पाण्डेय और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को दिया जाता है। परंतु उनके पीछे प्रेरणा स्रोत बने मातादीन भंगी की पत्नी लाजो और कोरी समाज की झलकारी बाई। 1857 में दलित समाज की महिलाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। इस स्वतंत्रता संग्राम में एक नाम ऐसा भी था जिसने अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। इस साहसी, वीरता की प्रतीक, वीरांगना का नाम अवंती बाई लोधी था। रानी अवंती बाई के उच्च चरित्र एवं वीरता की गाथा रामगढ़ के प्रत्येक नागरिक की जुबान पर आज भी गाई जाती हैं।

''देश की रक्षा करने के लिए या तो कमर कसो या फिर चूड़ियां पहनकर घर में बैठ जाओं।

तुम्हें धर्म और ईमान की सौगंध हैं जो इस कागज की पुड़िया का पता बैरी को दो।''—ये शब्द हैं सन् 1857 के विप्लव की क्रांतिकारी वीर—बाला रामगढ़ की रानी अवन्तीबाई के। अवन्तीबाई लोधी 1857 के आंदोलन के प्रमुख सूत्रधारों में से एक थीं।

महान विभूति अवन्तीबाई का नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में धरोहर के रूप में अंकित होते हुए भी जन साधारण तक पूर्णतः उजागर नहीं हो पाया हैं। रानी अवंतीबाई के बारे में मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रकाशित— ''मध्य प्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास'' में लिखा है कि ''मंडला जिले के वीर—नायकों में रामगढ़ की रानी भी थी, यद्यपि वह झाँसी की रानी से कम प्रख्यात है। लेकिन उसने अपनी मातृभूमि के प्रति जिस प्रेम तथा शौर्य का प्रदर्शन किया उसके कारण उसे हमारे देश की महानतम् वीर—बालाओं में स्थान मिलना चाहिए।''

एस0आर0आर0 रडमैन द्वारा संपादित 'मंडला गजेटियर' में वर्णित युद्धों में रामगढ़ की रानी के शौर्य—पराक्रम और रणकुशलता का विस्तार से वर्णन किया गया हैं। जी0एन0 सील कृत 'मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास' में उनके शासनकाल को स्वर्णयुग की संज्ञा दी गई हैं। डॉ0 आर0एम0 सिन्हा की 'जबलपुर जिले में 1857' आदि पुस्तकें उनकी वीरता के अविस्मरणीय उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के राव जुझारू सिंह और रानी सुमित्रा के यहाँ 16 अगस्त, 1831 ई0 को एक कन्या ने जन्म लिया जिसका नाम 'मोहिनी' रखा गया। 1848 ई0 को 17 वर्ष की आयु में मोहिनी का विवाह रामगढ़ के राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र विक्रमादित्य के साथ हुआ। रामगढ़ 14 परगनों वाला चार हजार वर्ग मील में फैला राज्य था। ससुराल में मोहिनी को 'अवन्तीबाई' नाम दिया। विवाह के बाद वे बिना पर्दा किए ही पति के साथ राज्य का भ्रमण करती और राज्यकार्य में हाथ बँटाती थी। अवन्तीबाई ने अमान सिंह और शेरसिंह नामक दो पुत्रों को जन्म दिया। लक्ष्मण सिंह की मृत्यु के बाद विक्रमाादित्य रामगढ़ के राजा बने। गद्दी पर बैठने के कुछ दिनों बाद अर्द्धविक्षिप्त हो जाने के कारण विक्रमाजीत सिंह मई 1857 को काल कवलित हो गए। उनके आकस्मिक निधन पर उनके नाबालिग पुत्रों—अमान सिंह और शेर सिंह में से अमान सिंह को गद्दी पर बैठाया गया और रानी अवन्तीबाई ने शासन—प्रबंध का संचालन स्वयं किया, परन्तु अंग्रेजों ने इस राज्य को 'कोट ऑफ वॉडर्स' के अधीन करके वहाँ ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने रेजिडेंट नियुक्त कर दिया।[71] अंग्रेजों ने राजकीय परिवार के सदस्यों के लिए पेंशन बांध दी। रानी ने कई बार विरोध में अपनी आवाज उठायी परन्तु कोई फल न निकला।

सन् 1857 की क्रांति का बिगुल बजने पर उन्हें बदला लेने का अवसर मिल गया। अतः अपने स्वाभिमान तथा राज्य की स्वाधीनता की रक्षार्थ रानी अवन्ती बाई भी अपने देश—प्रेमी राज्यभक्त साथियों के साथ स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ी। जब 1857 की राज्य क्रांति की पूर्व बेला में सारे उत्तर भारत में क्रांति का प्रतीक लाल कमल तथा रोटी गाँव—गाँव भेजी जा रही थी, तो अवन्तीबाई ने उसे स्वीकार किया। रानी ने मध्य प्रदेश के राजाओं और जागीरदारों को भी अंग्रेजों की कूटनीति से अवगत कराया और उन्हें भी स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित होने के लिए तैयार किया। रानी ने अपनी तरफ से पद्मिनी के वंशज और पुरवा के शंकरशाह, उमरी के उमराव सिंह, सुकरीवर्गी के बहादुर सिंह, बड़खेरा के जगत सिंह, हिंडोरिया के किशोर सिंह आदि जमींदारों के पास कागज की पुड़ियाँ भिजवाई। इन लोगों ने रानी की योजना को हृदय से स्वीकार किया। पुड़ियों में चूड़ियों के टुकड़े थे। इस प्रकार रानी के देशभक्ति पूर्ण कोमल व्यवहार तथा जन—सेवा ने जनता का दिल जीत लिया। उनकी सेना के तथा अंग्रेजी सेना के भारतीय

सैनिक गुप्त रूप से आत्मविभोर होकर यह गीत गाते थे–

दुर्गा मैया खड़ग खींच के आओ

बैरी को मार भगाओ।

बहुत दिनन से तड़प रहे हैं,

अब आकर लाज बचाओ।।

रानी की लोकप्रियता इससे प्रमाणित होती हैं कि अंग्रेजों के अत्याचारों से क्षुब्ध होकर प्रजा रानी के पैर पकड़कर कहने लगी थी कि ''हम तो युगों सताए हुए हैं, अब मिली है हमारी रक्षक। हमारे भाग्य ने हमारे पेट काटे और चिथड़ों का कर दिया अंत, अब लौटा हैं, हमारा भाग्य। हम अपनी रानी के लिए अपने टुकड़े–टुकड़े करा सकते हैं।''

जब अंग्रेजों ने रानी के सहयोगी साथ पुरवा के राजा शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह को बंदी बनाकर तोप से उड़ा दिया और उनका 'मंडला राज्य' छीनकर उस पर अपना आधिपत्य जमा लिया। इस घटना ने रानी अवन्तीबाई को झकझोर कर रख दिया। रानी ने इन लोगों की हत्या की खबर सुनकर कहा–''महारानी दुर्गावती के वंशज दोनों योग्य पुरुष तोप के मोहरे से उड़ा दिए गये, हम उन्हीं के किसी पराक्रमी वंशज को अपना नेता चुनेंगे।'' जब सैनिकों ने कहा कि रानी जी हम लोग आपके नाम पर युद्ध जारी रखेंगे। तब रानी ने उत्तर दिया–''मेरे नाम पर नहीं, देश के नाम पर राजा शंकरशाह के नाम पर लड़ूँगी और फिरंगियों के दाँत खट्टे करके ही मरूँगी, देह में एक भी बूँद रक्त जब तक रहेगा। इन फिरंगियों से लड़ूँगी, न चैन लूँगी न चैन लेने दूँगी।''

सी0यू0 विल्स ने अपनी पुस्तक ''सतपुड़ा पर्वत श्रेणी के राजगोंड महाराजाओं का इतिहास'' में लिखा हैं– ''जब शंकरशाह के मृत्युदण्ड का समाचार मंडला जिले में पहुँचा तो रामगढ़ की रानी ने विद्रोह कर दिया। रामगढ़ राजगोंड महाराजाओं के राज्य में एक अधीन राज्य था। रानी ने सरकारी अफसरों को निकाल भगाया, उनसे रामगढ़ छीन लिया और अपने पुत्र के नाम पर शासन करने लगी।'' जब जबलपुर के कमिश्नर को यह समाचार मिला तो वह आतंकित हो उठे। उन्होंने रामगढ़ की रानी को पत्र लिखकर मंडला के डिप्टी कलेक्टर से मिलने का आदेश दिया। विद्रोही रानी पर इस आदेश का कोई प्रभाव न ही पड़ा। उन्होंने पूर्ण उत्साह के साथ युद्ध की तैयारी आरम्भ कर दी। उन्होंने रामगढ़ के किले की मरम्मत करवाई तथा आस–पास के राजाओं के विरूद्ध सहायता मांगी। इन गतिविधियों से अंग्रेज आतंकित हो उठे।

इधर वाशिंगटन ने लेफ्टिनेंट वार्टन, काकवन, जनरल िटलाक तथा रीवा नरेश से सैनिक सहायता लेकर अपनी शक्ति बढ़ा ली और 15 जनवरी, 1858 को थुथरी पर अधिकार करते हुए रामगढ़ की ओर प्रस्थान किया। किले को घेर लिया गया। रानी को आत्मसमर्पण के लिए संदेश भेजे गए, परन्तु वह किले से बाहर निकलकर युद्ध मैदान में आ डटी। उन्होंने स्वयं सेना का संचालन किया। उनकी ललकार व युद्ध क्षमता देखकर अंग्रेज दंग रह गए। अंग्रेज सेना को पीछे लौटना पड़ा। वांशिंगटन ने दूसरी बार पहले से अधिक सेना लेकर आक्रमण किया। इस बार भी रानी खूब बहादुरी से लड़ीं। हजारों की संख्या में ब्रिटिश सैनिक मारे गए, शेष मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए। इस भगदड़ में वाशिंगटन का लड़का भी खो गया। रानी को जब बच्चे का पता लगा तो उसने मानवता और मातृत्व भावना से प्रेरित होकर उसे कैप्टन वाशिंगटन के पास पहुँचा दिया। रानी ने मंडला पर पूर्णाधिकार कर लिया।

31 मार्च, 1858 को वाशिंगटन ने फिर रामगढ़ के किले पर आक्रमण कर दिया। तीन दिन तक भयंकर युद्ध होता रहा, किन्तु वााशिंगटन लाख कोशिश करने पर भी किले में प्रवेश न कर सका। तब उसने किले के चारों ओर

से नाकेबंदी कर दी जिससे किले के अन्दर भोजन तथा जल आदि की समस्या उत्पन्न हो गई। रानी को आशा थी कि रीवा राज्य उनकी सहायता करेगा, परन्तु वह रियासत अंग्रेजों से मिल गई। रानी हतोत्साहित नहीं हुई। वह रणचडिका बनकर सिपाहियों को प्रेरणा देती रहीं, किन्तु अंत में उनकी पराजय हुई। विवश होकर रानी को किला छोड़ना पड़ा। अंग्रेज सेना ने किले को ध्वस्त कर शाही खजाना लूट लिया। रानी ने भागकर देवगढ़ के जगलों में शरण ली। रानी को आत्म समर्पण करने के लिए संदेश भेजा गया जिसे रानी ने अस्वीकार कर दिया। जब उनका अंग्रेजों की गिरफ्त में आना निश्चित हो गया तो रानी ने देश की गौरवशाली परम्परा के अनुरूप अपने आत्म–सम्मान की रक्षा के लिए उमराव सिंह से तलवार लेकर अपने पेट में घोंपकर आत्मघात कर लिया। मृत्यु के समय उस वीर रानी ने स्वीकार किया कि –"इस विद्रोह के लिए मैं स्वयं जिम्मेवार हूँ। मैं ही सैनिको को भड़काकर युद्ध के लिए तैयार किया, वे स्वयं विद्रोही नहीं बने। उनको कोई दंड न दिया जाये।'' और इतिहास की इस महान देवी की आँखें सदा के लिए बंद हो गई।

ईमानदारी, निष्ठा और देश भक्ति के लिए बलिदान होने वाली रामगढ़ की इस बहादुर रानी की यह वीर–गाथा भी रानी लक्ष्मीबाई की शौर्य–परम्परा की एक कड़ी है। अवंतीबाई की अविस्मरणीय भूमिका की छाप हमारे दिलों में अमिट रहेगी। महारानी अवन्तीबाई सदा के लिए देश पर मिटने वाले शहीदों के साथ अमर हो गई।

इस प्रकार रानी अवंती बाई लोधी ने अपने ऐतिहासिक शौर्य, पराक्रम, वीरता तथा साहस के बल पर स्त्रीजाति को सम्मान का प्रतीक बना दिया। भारतीय जन–मानस उनको अपने ह्रदय में सदैव सम्मान के साथ याद करता रहेगा।

संदर्भ

- देवेन्द्र चौबे, 1857 भारत का पहला मुक्ति संघर्ष, प्रथम संस्करण, 2008, नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।
- डी0सी0 डीन्कर, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतों का योगदान, चतुर्थ संस्करण, 14 अप्रैल, 2007, दिल्ली, गौतम बुक सेन्टर।
- आशारानी व्होरा, महिलाएँ और स्वराज्य, द्वितीय संस्करण, 1999, नई दिल्ली, प्रकाश विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
- शान्ति कुमार स्याल, गौरवशाली भारतीय वीरांगनाएँ, प्रथम संस्करण, 2007, दिल्ली, आत्माराम एण्ड संस
- मंजू सुमन, दलित महिलाएँ, प्रथम संस्करण, 2004, नई दिल्ली, सम्यक् प्रकाशन।
- उत्तर प्रदेश पत्रिका, अगस्त 2007
- साम्या, अप्रैल–सितम्बर, 2007
- ऊषा चन्द्रा, सन् सत्तावन के भूले–बिसरे शहीद, प्रथम संस्करण, 1986, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
- गगनांचल, अप्रैल–सितम्बर, 2006
- उषा बाला, भारत की वीरांगनाएँ, द्वितीय संस्करण, 2006 नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
- आजकल, मई 2007

Copyright © 2014, Dr. Neeta. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.